ग्राम श्री

कविता का सार / प्रतिपाद्य

यह कविता सुमित्रानंदन द्वारा रचित है। इसमें कवि ने गाँवों में वसंत ऋतु में व्याप्त सौंदर्य का वर्णन किया है। कवि ने खेतों में लहलहाती फसल, विभिन्न प्रकार के फूल, फल-सब्ज़ी, गंगा नदी, गाँव इत्यादि के सौंदर्य को बड़े सुंदर ढ़ंग से दर्शाया है। इसे पढ़कर मन रोमांचित हो उठता है। ये सौंदर्य चित्र हमारी आँखों के आगे साकार हो उठते हैं। हम प्रत्येक चित्र को जीने लगते हैं। ये मनमोहक चित्र हमें ग्राम के सौंदर्य का सटीक और सजीव वर्णन करते हैं।

कविता का भाव

➽ ग्राम के प्रकृति के सौंदर्य का शोभाशाली वर्णन है। वसंत में चारों ओर का वातावरण मनुष्य को बाँधे रखता है। यह सौंदर्य शोभाशाली और पवित्र है।

भाषा शैली की विशेषताएँ

➽ श्रृंगार रस
➽ सरल भाषा
➽ प्रवाहमयी भाषा
➽ मुक्त छंद का प्रयोग
➽ शब्द चित्र की प्रधानता
➽ अलंकारों का सुंदर प्रयोग
➽ गेयता का गुण विद्यमान
➽ तत्सम तथा देशज शब्दों का प्रयोग

कविता का उद्देश्य

➽ गाँवों के अद्भुत सौंदर्य को लोगों के समक्ष लाना।

कविता से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

➽ यह कविता सीख देती है कि हमें प्रकृति के समीप रहना चाहिए। यह सौंदर्य मनुष्य के जीवन में ऊर्जा तथा प्रेम का संचार करता है।